SEMESTER - II

CC- 6

History of Europe and Modern World (1919-2000)

- **Unit – 2 :** Rise of totalitarianism in Europe

  Causes and significance of Spanish civil War

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

स्पेन का गृहयुद्ध (1936 – 1939 ईस्वी)

उग्र राष्ट्रवाद, तुष्टीकरण नीति, गुटबंदी, फासीवादी सोच ने जिस विश्व युद्ध की दुबारा नींव डाली, उससे शायद ही कोई राष्ट्र अछूता रहा हो और इसी क्रम में स्पेन के फासीवादी तानाशाह ने भी भाग लिया, क्योकि यूरोप महादेश में जितने भी बड़े साम्राज्य थे, उनमे से एक साम्राज्य स्पेन का भी था! स्पेन में गृहयुद्ध १९३६-१९३९ ईस्वी तक चला! हालांकि यह युद्ध स्पेन का आंतरिक मामला था, परन्तु विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप करने के कारण यह गृहयुद्ध अंतर्राष्ट्रीय महत्व का बन गया तथा सर्वसत्तावाद को स्थापित करने में इसने भी महत्वपुर्ण भूमिका निभाई!

गृहयुद्ध के कारण

स्पेन में दीर्धकाल से राजतंत्रात्मक शासन पद्धति थी तथा स्पेन की शासन व्यवस्था! राजनीति पर कुलीन वर्ग व पादरियों का वर्चस्व कायम था! यही कारण था की स्पेन ने १९वी शताब्दी में यूरोपियन राजनीति में सक्रिय भूमिका नहीं निभाई! इन सत्तालोलूप शासकों के अदूरदर्शी व अनुदार रवैये के कारण स्पेन में परिवर्तनशील आर्थिक आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पा रही थी, जिसके विरोध में उदारवादी आंदोलन भी हुए, जिसे शक्ति के बल पर शासक वर्ग ने कुचल डाला! प्रथम विश्व युद्ध में स्पेन ने केन्द्रीय शक्तियों को समर्थन दिया था, अपितु स्पेन की सरकार इस महायुद्ध में तथस्थ बनी रही! युद्ध के पश्चात् आर्थिक कठिनाइयों का प्रभाव अन्य राष्ट्रों की भांति स्पेन पर भी पड़ा और इसी के बाद स्पेन की राजनीति में उथल-पुथल आरम्भ हो गया, जिसने गृहयुद्ध की रुपरेखा तैयार की -

* कैटालोनिया निवासियों की मांगे
* मोरक्को की समस्या
* प्रीमो दि रिवेरा की परिस्थिति प्रतिकूल कार्यवाहियां
* स्पेन में गणतंत्र की स्थापना, इत्यादि !

प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्पेन में बढ़ते आर्थिक असंतोष ने कैटालोनिया में विद्रोही गतिविधियों को तीव्र कर दिया! वहा के निवासियों की प्रमुख मांग स्वतंत्रता थी! इसके लिए उन्होंने राज्य को स्वतन्त्र कर वहा पृथक संसद व कार्यपालिका के

गठन की मांग की, जिसमे स्पेन की सरकार का नगण्य हस्तक्षेप हो! इसी समय स्पेन व मोरक्को के बीच युद्ध होने लगा, जिसमे स्पेन का जनरल सिल्वेस्ट्रो पराजित हुआ! इससे क्षुब्ध होकर जनरल ने आत्महत्या कर ली और स्पेन जनता ने इसका कसूरवार राजा अलफांसो को ठहराया! १९२३ में एक अन्य स्पेनी सैनिक अधिकारी प्रीमो दि रिवेरा (Primo De Rivera) ने विद्रोहियों का दमन कर स्पेन की सत्ता पर अधिकार कर लिया, राजा स्वयं को असुरक्षित समझकर प्रीमो का ही साथ दिया, जिसके कारण १९२३-१९३० तक प्रीमो एक तानाशाह (Dictator) की भाति शासन करता रहा! परन्तु स्पेन की परिस्थितियों को सँभालने में असफल होता देखकर व शारीरिक अस्वस्थता के कारण उसने त्यागपत्र दे दिया व स्वयं फ्रांस चला गया!

रिवेश के बाद वैरेगुआर ने सरकार बनाई, परन्तु उसके तानाशाही रवैये व गणतंत्र की प्रबल भावना के कारण स्पेन की जनता नारे लगाने लगी - "राजा तथा राजतन्त्र समाप्त हो!" राजा अलफांसो XIII ने इस राजतंत्र विरोधी भावना के आगे घुटने टेक दिए व १९३० इ॰ में फ्रांस भाग गया! इस प्रकार गणतंत्रवादी सफल हुए तथा जमोरा (Zamora) पहला अस्थायी राष्ट्रपति बना! २८ जून, १९३३ इ॰ को स्पेन में चुनाव हुए, जिसमे गणतंत्रवादियो की विजय हुई तत्पश्चात स्पेन को 'सभी वर्गों के श्रमिकों का लोकतंत्रात्मक गणतंत्र' घोषित किया गया! गणतंत्रवादी सरकार के अंतर्गत जमोना को स्थायी राष्ट्रपति नियुक्त किया गया! इस सरकार के अंतर्गत स्पेन में कई सुधारात्मक कार्य हुए, परन्तु राजनीतिक भ्रष्टाचार ने अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी, जिसके कारण स्पेन में गृहयूद्ध अनिवार्य हो गया!

१९३६ ईस्वी के उत्तरार्द्ध में स्पेन में ऐसी घटना घटी, जिसका सम्बन्ध अंतर्राष्ट्रीय न होते हुए भी अंतर्राष्ट्रीय महत्व का हो गया! १७ जुलाई १९३६ को स्पेनिश मोरोक्को में तैनात सेना के सेनापति जनरल फ्रांको (General Franco) ने स्पेन की आंतरिक अराजकता का लाभ उठाते हुए विद्रोह कर दिया और इस तरह स्पेन में गृहयूद्ध आरम्भ हो गया! जनरल फ्रांको अपनी सेना के साथ स्पेन में घुस गया व बिना किसी प्रतिरोध के उसने दक्षिणी स्पेन पर अधिकार कर लिया तथा नवंबर की मध्य तक मेड्रीड़ के उपनगरों तक पहुँच गया! अतः स्पैनिश सरकार को अपना मुख्यालय वेलेंशिया (Velencia) में स्थापित करना पड़ा! एक तरफ जनरल फ्रांको अपनी सेना के साथ पुरे स्पेन को हड़पने में लगा

हुआ था, वही दूसरी तरफ जर्मनी व इटली में क्रमशः दो तानाशाह हिटलर मुसोलिनी का उदभव हो चूका था, जिसके भय से पूरा यूरोप, अमेरिका थरो उठा था! सर्वसत्तावाद की उनकी लालसा ने द्वितीय विश्व युद्ध को अवश्यभावी बना दिया था! इन दो तानाशाहों का शह जनरल फ्रांको को भी मिला, जिसके परिणामस्वररूप वह निरंतर विजय प्राप्त करता रहा! अंततः २८ जनवरी, १८३९ को उसने बार्सीलोना पर भी अधिकार कर लिया! इस प्रकार सम्पूर्ण स्पेन पर अधिकार करने क पश्चात् जनरल फ्रांको ने स्पेन में अपने सरकार की घोषणा कर दी तथा कुछ समय पश्चात् यूरोपियन राष्ट्रों ने भी जनरल फ्रांको की सरकार को मान्यता प्रदान कर दी!

स्पेनिश गृहयुद्ध का महत्व

स्पेन का अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विशेष हस्तक्षेप नहीं था! सामान्य परिस्थितियों में घटित गृहयुद्ध का किसी अन्य राष्ट्र पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए, परन्तु विशेष कारणों ने स्पेन के गृहयुद्ध को न केवल अंतर्राष्ट्रीय घटना बनाया, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय महत्व का बना दिया! जैसा की इतिहासकार ई ० एच०कार ने अपनी पुस्तक 'दो विश्वयुद्धो के बीच अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' में लिखा है कि "वैसे अन्य परिस्थितियों में स्पेन का गृहयुद्ध अंतर्राष्ट्रीय न बना होता! जिन कारणों से वह अंतर्राष्ट्रीय घटना बन सका, वे दो प्रकार के थे! एक तो इटली हाल ही में अबीसीनिया पर विजय प्राप्त कर चूका था! जिससे भूमध्यसागर का सामरिक सुस्पष्ट हो गया था! अतः उसने पश्चिमी भूमध्यसागर में अपनी स्थति सुदृढ़ बनाने के इस अवसर का स्वागत किया! दूसरे प्रथम विश्व युद्ध के बाद से ही यह विचार जोर पकड़ रहा था कि किसी देश का आंतरिक संगठन जिस

राजनीतिक सिद्धांत पर आधारित हो, उस देश से अन्य देशो में उस सिद्धांत की विजय के लिए प्रोत्साहन तथा सहायता अपेक्षित है!" इस गृहयुद्ध के प्रति यूरोप की विभिन्न शक्तियों का नजरिया अलग - अलग था!

इटली में फासिस्ट पार्टी की सरकार थी और उसकी मंशा थी कि अन्य राज्यों में भी फासिस्टवाद की स्थापना हो और स्पेन के गृहयुद्ध को इटली ने फासिस्टवाद और कम्युनिज्म के मध्य संघर्ष माना और सहायतार्थ मुसोलिनी ने फ्रांको की सेना को मोरक्को से स्पेन लाने के लिए वायुयान भेजे व अन्य तरह की सहायता की! इसी तरह फ्रांस को तीन तरफ से शत्रुओं से घेरने के लिए हिटलर ने स्पेन में फ्रांको की सरकार स्थापित करने में मदद की! इसके अतिरिक्त हिटलर भूमध्यसागर में अपना प्रभाव बढाकर इंग्लैंड को घुटनों पर लाना चाहता था! रूस में साम्यवादी सरकार थी, जो स्पेन में गणतंत्र के शासन का समर्थन कर रही थी! रूस का विचार था कि यदि स्पेनिश गृहयुद्ध में स्पेनी सरकार की पराजय हो गई, तो जर्मनी का प्रभाव स्पेन पर भी छा जाएगा! रूस विश्व में तानाशाह के महत्व को बढ़ाना नहीं चाहता था! इसीलिए उसे फ्रांस और इंग्लैंड से कहा कि वे स्पेनी सरकार की फ्रांको के विरुद्ध मदद करे, परन्तु इन सबके बावजूद भी फ्रांको की आंधी नहीं हटी! इंग्लैंड, रूस की अपील के बावजूद गृहयुद्ध को स्पेन का आंतरिक मामला मानकर इसमें हस्तक्षेप करने का इच्छुक नहीं था, वही दूसरी ओर जिब्राल्टर खोने के डर से उसने फ्रांको का विरोध नहीं किया तथा उसे डर था कि रूस के समर्थन वाली स्पेनी सरकार अगर विजीत होती है, तो इससे कम्युनिज्म को स्पेन में बढ़ावा मिलेगा! फ्रांस ने इंग्लैंड की देखा-देखी की तथा उसके इटली से अचे सम्बन्ध थे और वह फ्रांको के विरुद्ध जाकर इटली को नाराज़ नहीं करना चाहता था! अब रही बात अमेरिका की, तो उसके सामने प्रथम विश्व युद्ध व उसके बाद विश्व व्यापी आर्थिक मंदी का घाव अभी भरा नहीं था! दूसरी तरफ अमेरिका जैसा उपनिवेशवादी राष्ट्र भी, कम्युनिज्म को अपना शत्रु समझता था! इसीलिए उसने भी रूस समर्थिक स्पेनी सरकार की मदद नहीं की!

स्पेनी गृहयुद्ध का महत्व यह रहा कि इसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरे विश्व को प्रभावित किया! रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका से नाराज़ होगया, वही इटली, जर्मनी, पुर्तगाल में घनिष्टता बढ़ी! वही इस गृहयुद्ध ने राष्ट्रसंघ कि कमज़ोरी को भी प्रकट कर दिया और सबसे बड़ा प्रभाव स्पेन पर पड़ा! गृहयुद्ध के बाद स्पेन में गणतंत्र की समाप्ति हुई व तानाशाह अथवा सर्वसत्तावाद की स्थापना हुई!